

न्यायालय राजस्व अपील प्राधिकारी, पाली कैम्प सिरोही
पीठासीन अधिकारी : डॉ० बजरंगसिंह चौहान, आर.ए.एस.

राजस्व अपील : 10/2009

अपीलान्त

सुरेश पुत्र अजेतींग जाति पुरोहित
निवासी किवरली तहसील आबूरोड

बनाम

रेस्पोंडेन्ट :-

- 1 जमानींग पुत्र अजेतींग जाति पुरोहित
निवासी किवरली तहसील आबूरोड
- 2 सविता पत्नी जमानींग जाति पुरोहित
निवासी किवरली तहसील आबूरोड
- 3 तगताबाई पत्नी मोबतींग जाति
पुरोहित निवासी डूंगरी तहसील
पिण्डवाडा
- 4 मूलीबाई पत्नी गोपालींग जाति
पुरोहित निवासी डूंगरी तहसील
पिण्डवाडा
- 5 सोपूबाई पत्नी छगनजी जाति
पुरोहित निवासी बाटेरा तहसील
पिण्डवाडा
- 6 शांतिबाई पत्नी खीमाशंकर जाति
पुरोहित निवासी आदर्श तहसील
पिण्डवाडा
- 7 अम्बाबाई पत्नी सांकलाजी जाति
पुरोहित निवासी किवरजी तहसील
आबूरोड
- 8 कालु पुत्र सवाजी जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 9 हिरा पुत्र जालाजी जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 10 अचलाराम पुत्र लाडूराम जाति
पुरोहित निवासी किरवली तहसील
आबूरोड
- 11 नारायण पुत्र समाराम उर्फ समरतींग
जाति पुरोहित निवासी किरवली
तहसील आबूरोड
- 12 चतुर्भज पुत्र समाराम उर्फ समरतींग



राजस्व अपील प्राधिकारी
पाली कैम्प सिरोही

- जाति पुरोहित निवासी किरवली
तहसील आबूरोड
- 13 मोहन पुत्र समाराम उर्फ समरतीग
जाति पुरोहित निवासी किरवली
तहसील आबूरोड
- 14 नवाराम पुत्र लाडूराम जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 15 शंकर पुत्र उमेदीग जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 16 भेरा पुत्र उमेदीग जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 17 भागु पत्नी उमेदीग जाति पुरोहित
निवासी किरवली तहसील आबूरोड
- 18 गणेशराम पुत्र सवलाराम जाति
पुरोहित निवासी किरवली तहसील
आबूरोड
- 19 गोपालराम पुत्र धन्नाराम जाति
पुरोहित निवासी किरवली तहसील
आबूरोड
- 20 शांतिबाई पत्नी धन्नाराम जाति
पुरोहित निवासी किरवली तहसील
आबूरोड
- 21 राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार
आबूरोड

अपील अन्तर्गत धारा 225 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955

उपस्थित :-

श्री राजेन्द्रसिंह आढा, विद्वान अभिभाषक अपीलाण्ट
श्री नगेन्द्र मेडतीया, विद्वान अभिभाषक रेस्पोजेण्ट्स
सरकारी पैरोकार, रेस्पोजेण्ट संख्या 21 की ओर से



:- निर्णय :-

दिनांक:- 20/12/2018

अपीलान्ट की ओर से उनके अधिवक्ता ने यह अपील अन्तर्गत धारा 225

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के तहत सहायक कलक्टर आबूपर्वत द्वारा राजस्व

राजस्व अपील प्राधिकारी
पाली जेम्प सिरोही

प्रार्थना पत्र संख्या 25/2008 बअनवान सुरेश बनाम जमानीग वगैरा में पारित आदेश दिनांक 13.10.2009 के विरुद्ध पेश की गई। अपील दर्ज रजिस्टर कर रेस्पोंडेन्ट्स को जरिये सम्मन तलब किया गया। अधीनस्थ न्यायालय का रिकॉर्ड तलब किया गया। उभयपक्ष अभिभाषकगण की बहस सुनी गई।

विद्वान अभिभाषक अपीलान्ट ने अपील बहस के दौरान अपील में वर्णित तथ्यों को दोहराते हुए कथन किया कि अपीलान्ट द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 53, 88, 91, 92ए, 188 व 209 के तहत वाद प्रस्तुत किया, जो विचाराधीन है। उक्त वाद के साथ धारा 212 के तहत प्रार्थना पत्र भी प्रस्तुत किया। जिस पर अधीनस्थ न्यायालय द्वारा दस्तावेजात् का अवलोकन किए बिना ही जैर अपील निर्णय पारित किया है, जो विधि विरुद्ध है। अजेतींग ने अपने जीवनकाल में अपीलान्ट एवं रेस्पोंडेन्ट संख्या 1 को गोद लिया, जिसका गोदनामा एवं वसीयतनामा निष्पादित किया था। उक्त गोदनामा एवं वसीयतनामा अस्तित्व में रहते रेस्पोंडेन्ट संख्या 3 से 7 का नाम राजस्व रिकॉर्ड में इन्द्राज नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त रेस्पोंडेन्ट संख्या 3 से 7 ससुराल में निवास करती है, इनका जैर अपील वादस्थ भूमि से किसी प्रकार का सरोकार नहीं है। इन समस्त तथ्यों को अधीनस्थ न्यायालय द्वारा नजर अन्दाज करते हुए जैर अपील आदेश पारित करते हुए अपीलान्ट/प्रार्थी का अस्थाई निषेधाज्ञा बाबत प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया। अब उक्त भूमि के राजस्व रिकॉर्ड में रेस्पोंडेन्ट संख्या 3 से 7 का नाम विधि विरुद्ध रूप से दर्ज होने का अनुचित लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से ये उक्त भूमि का बेचान हस्तान्तरण करने पर आमादा है, जिन्हें नहीं रोका गया, तो अपीलान्ट को क्षति कारित होगी। अतः जैर अपील आदेश अपास्त करावें एवं रेस्पोंडेन्ट को वादस्थ भूमि के रिकॉर्ड एवं मौके की यथास्थिति बनाये रखने हेतु पाबन्द करावें।

विद्वान अभिभाषक रेस्पोंडेन्ट्स ने अपनी बहस में कथन किया कि अस्थाई निषेधाज्ञा जारी करने हेतु तीन बिन्दुओं को अपने पक्ष में साबित किया जाना आवश्यक है, जिसमें प्रथम दृष्टया मामला, सुविधा का सन्तुलन एवं अपरिमित क्षति को साबित किया जाना आज्ञापक है। अपीलान्ट के पक्ष में प्रथम दृष्टया मामला किसी भी रूप में प्रमाणित नहीं होता है। अपीलान्ट ने स्वयं को अजेतींग का गोदीपुत्र होना बताया, जबकि जमानीग अजेतींग का जायन्दा पुत्र है। एक जायन्दा पुत्र के मौजूद होते हुए गोदी पुत्र होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। अपीलान्ट राजकीय सेवा में अध्यापक के पद पर कार्यरत है तथा इनके समस्त दस्तावेजात् में सकूनत समरतींग है, तो यह गोद पुत्र कैसे हो सकते हैं। रेस्पोंडेन्ट्स की भूमि अवैध रूप से हडप करने की नियत से अजेतींग का गोदीपुत्र की हैसियत से अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष दावा प्रस्तुत किया है। रेस्पोंडेन्ट्स राजस्व रिकॉर्ड में खातेदार दर्ज है तथा एक रिकॉर्ड खातेदार को अस्थाई निषेधाज्ञा से पाबन्द नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार अधीनस्थ न्यायालय द्वारा विधि सम्मत निर्णय पारित करते हुए



राजस्व अपील प्राधिकारी
पाली केम्प सिरोही

अपीलाण्ट द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र खारिज किया है, जो विधि सम्मत है। अतः अपील खारिज की जावे।

विद्वान अभिभाषक अपीलाण्ट ने बहस के प्रत्युत्तर में कथन किया कि अजेतींग द्वारा वसीयतनामा व गोदनामा निष्पादित किया है, उक्त समस्त दस्तावेजात् को रेस्पोजेन्ट द्वारा निरस्त कराने की कोई कार्यवाही नहीं की है, जिसके कारण वे समस्त दस्तावेज प्रभाव में है एवं साक्ष्य में शुमार योग्य है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा इन दस्तावेजात् पर कोई गौर नहीं किया तथा बिना किसी आधार के अपीलाण्ट द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र खारिज किया है, जो विधि विरुद्ध है। अतः अपील स्वीकार करावें।

बहस पर मनन किया तथा दस्तावेजात् का अवलोकन किया। अपीलाण्ट द्वारा अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष वाद प्रस्तुत कर वादस्थ भूमि में अजेतींग का गोदीपुत्र होने के नाते अपने हिस्से की भूमि की खातेदारी घोषणा, बंटवाडा एवं स्थाई निषेधाज्ञा का अनुतोष चाहा, साथ ही रेस्पोजेन्ट्स को वादस्थ भूमि के रिकर्ड एवं मौके की यथास्थिति बनाये रखने हेतु अस्थाई निषेधाज्ञा से पाबन्द कराने का निवेदन किया। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा जैर अपील निर्णय के जरिये रिकर्डेड खातेदार को अस्थाई निषेधाज्ञा के जरिये पाबन्द किया जाना न्यायोचित नहीं माना है। इस सम्बन्ध **2013(2) RRT Page 828 Rameshi vs. Kajod & ors** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- temporary Injunction application rejected & affirmed by the appellate Court-Land not recorded in the Khatedari of the plaintiff- No. T.I. can be granted against the recorded khatedar- Possession of non-petitioners no. 3 & 4 would be treated after the death of 'B'- Petitioner failed to prove possession- objection raised can only be decided during trail-Concurrent judgments- Held, No illegality or perversity in the order. **2012(2) RRT Pg. No. 1439 Pooran Chand & ors. V/s. Gopal Prasad & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Trail court restrained both the parties but RAA Dismissed the application of the petitioners – Land recorded on Khatedari of GP – No Revenue entry in favour of the petitioners – Khatedari of 'GP' is based in the registered sale deed Appellate court not found the Prima facie case in favour of the petitioner 'KP' & ors. – Concurrent finding regarding Khatedari & possession – No T.I. can be granted against the recorded Khatedar holding possession – Held, R.A.A. has not committed any illegality or jurisdictional error.(Para's 7,8). **2009(2) RRT Pg. No. 1327 Nannu Ram (Dead) through L.Rs. V/s.Jorlam & ors.** में प्रतिपादित किया कि "Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary Injunction RAA st aside the order – Revision – suit for declaration on the basis of adverse possession – Petitioner admitted that non-petitioners are recorded Khatedar- Both the parties are claiming possession & their question cannot be decided as this stage – Held, no error in the order & upheld.(Para's 5,7). **RRT 2013(1) Pg. No. 133 Kalu & ors. V/s. Jagdish Prasad & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- RAA set aside the order of granting TI – Non-petitioner purchase the land from the recorded Khatedar of the land by regd. Sale deed- Petitioners are required to prove their case by producing evidence – Prima facie case in favour of the non-petitioners – Held, No Jurisdictional error in the order. (Para's 7,8). **RRT 2013(2) Pg. No.**



राजस्व अपील प्राधिकारी
पाली केम्प सिरोही

805 Narayan Singh & ors. V/s. Ramesh में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary injunction – Trail court directed the parties to maintain the status quo of revenue record & at site – Appeal dismissed – Order should have been passed on merits considering the three necessary elements- Held, orders are set aside & case remanded to trail Court.(Para's 7 , 9). **2006-07(supp.) RRT, Pg. No. 368 Dhanni V/s. Ramuram** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Revision – Scope – Temporary injunction refused- Order upheld in appeal – Petitioner failed to prove prima facie case, balance of convenience & irreparable loss – Rights & title will be decided in regular suit – Possession not proved – Scope of revision is very limited – Re-appreciation of facts in not. Justified-Held, Revision deserves to be dismissed.(Para's 9,10). **RRT 2015(1) Pg. No. 633 Awtar Khan V/s. Mehar Bano & ors.** में प्रतिपादित किया कि "Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary Injunction – Applications dismissed – Respondent No. 1 & 2 are the recorded Khatedar of the land & no temporary Injunction can be granted – Concurrent finding – Limited scope – Held, No material illegality or jurisdictional error in the order. (Para's 8,9). **RRT 2015(1) Pg. No. 560 Jhanwari Lal & ors V/s. the Board of Revenue & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary Injunction – R.A.A. Set aside the order of granting T.I. & Affirmed by the BOR – Registered sale deed in favour of 'B' husband of the respondent no. 2 – No prima facie case found in favour of the petitioners – Held, No error in order of rejecting revision. (Para's 9,10,11). **RRT 2014(2) Pg. No. 1301 Goparam & ors V/s. Harima Ram & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary Injunction – Application for granting T.I. was dismissed – Defendants / non-applicants are the recorded Khatedar of the land & they are in possession of the land – Concurrent findings – Held, No T.I. can be granted & order suffered with no irregularity or illegality.(Para 7). **RRT 2004(1) Pg. No. 587 Kaushlya V/s.Chotu & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- P&N purchased the land from non-petitioner nos. 1 to 3 who subsequently sold to non-petitioners nos. 5 to 9 & they are in possession of land – No Possession of plaintiff – 1/5 share claimed by plaintiff in property being ancestral – No prima facie, or balance of convenience in favour of petitioners – Held, no illegality or irregularity in the order of R.A.A. (Para's 7,8). **RRT 2009 (2) Pg. No. 1398 Ramjuddin & ors V/s. Ganesh Kumar & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Temporary Injunction – Name of non-petitioner no. 1 entered wrongly in the revenue record – Suit relating to land is pending disposal since 1995 – Non Petitioner sold the Land to non-petitioner no. 2 & 3 pending suit- Non-petitioner no. 1 recorded Khatedar & petitioner has not produced any document of possession – No T.I. can be granted against a recorded Khatedar – Concurrent findings – Interference not justified.(Para 7). **RRT 2009(2) Pg. No. 1393 Dhupa V/s. Mamman & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212 & 230 - Application for granting T.I. rejected in absence of the prima facie case – revision – Non-Petitioners are recorded Khatedar of the disputed land & they are in possession – No proof produced to show possession – Concurrent finding – Held, No case made out for interference.(Para's 8,9). **RRT 2001(2) Pg. No. 1261 Smt. Prakash Kanwar & ors V/s. Kailash Chandra & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act, 1955-Sec. 212- Land in disputed is a




राजस्व अपील प्राधिकारी
पाली केम्प सिरोही

firm property - ½ share of plaintiff's father & half share was of 'S' & 'P' who sold it to 'R', 'K' & 'R' through regd. Sale deed - 'R', 'K' & 'R' again sold to land to 'P', 'A' & 'M' through Regd. Sale deed- Parties are joint recorded Khatedar & co-tenant - Held, No order of T.I. can be passed against co-tenant to deprive them from use if their share & also cannot be evicted & orders are set aside. (Para's 9, 10). **RRT 2010(2) Pg. No. 1392 Ramkaran & ors. V/s Smt. Ghewari & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act. 1955-Sec. 212- Temporary Injunction - Application and Appeal rejected - G.R. was the co-tenant & he sold the land to 'G' & and she became Khatedar - No name of 'KR' in Kh. No. 10 nor he has possession - No document produced to prove the land ancestral - Recorded Khatedar Cannot be restrained from selling his share- Concurrent finding - Held, No illegality in the order. (Para's 11, 12). **RRT(2) Pg. No. 1327 Nannu Ram (dead) through L.Rs. V/s Jormal & ors.** में प्रतिपादित किया कि " Rajasthan tenancy act. 1955-Sec. 212- Temporary Injunction - R.A.A. set aside the order - Revision - Suit for declaration on the basis of adverse possession - Petitioners admitted that non-petitioners are recorded Khatedar - Both the parties are claiming possession & their question cannot be decided at this stage- Held, No error in the order & upheld (Para's 5, 7). अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष अपीलाण्ट द्वारा जो अनुतोष चाहा है, वह मूल वाद में तनकीयात कायम होकर उन पर संग्रहित साक्ष्यों के आधार पर तनकीयात विनिश्चय पर ही होगा, जिसमें गोदनामा, वसीयतनामा आदि दस्तावेजात् का विधिक परीक्षण किया जायेगा। रेस्पोंडेन्ट राजस्व रेकॉर्ड में खातेदार दर्ज है तथा कानूनन रेकॉर्डेड खातेदार को अस्थाई निषेधाज्ञा के जरिये पाबन्द किया जाना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता है। इस कारण अधीनस्थ न्यायालय द्वारा पारित जैर अपील निर्णय में किसी प्रकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

परिणाम स्वरूप अपीलाण्ट द्वारा प्रस्तुत अपील सारहीन एवं बलहील होने से खारिज की जाती है तथा सहायक कलेक्टर आबूपर्वत द्वारा राजस्व प्रार्थना पत्र संख्या 25/2008 बअनवान सुरेश बनाम जमानींग वगैरा में पारित आदेश दिनांक 13.10.2009 को यथावत रखा जाता है। निर्णय की प्रमाणित प्रतिलिपी के साथ अधीनस्थ न्यायालय को रेकॉर्ड लौटाया जावे।

निर्णय आज दिनांक 20.09.2018 को मेरे द्वारा लिखवाया जाकर बाद हस्ताक्षर कर खुले न्यायालय में सुनाया गया।




(डॉ० बजरंग सिंह चौहान)

राजस्व अपील प्राधिकरारी, पाली
कैम्प सिराही